चाक' उपन्यास में विविध लोकगीत

बलवीर सिंह राठौड[1] , डॉ. राजेश कुमार शर्मा

[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग (कला संकाय) , भगवंत विश्वविद्यालय , अजमेर

[2]शोध निर्देशक, वरिष्ठ व्याख्याता : हिन्दी विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

सारांश : मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में, ''मन में गाँव घूमता है। 'इदन्नमम लिखा, अब फिर गाँव'! .....''। 1 'चाक' उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा का सुप्रसिद्ध उपन्यास है। 'इदन्नमम' के पश्चात् 'चाक' मैत्रेयी पुष्पा की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। गाँव को रग–रेशों में जीता हुआ आत्मीय दस्तावेज – पुरूष समाज में स्त्री की अपनी पहचान का संकल्प पत्र। 'चाक' घूमता है ब्रज प्रदेश के किसानों के बीच। 'चाक' का दूसरा नाम है समय–चक्र। चाक घूमेगा और मिट्टी को बिगाड़ कर नया बनाएगा। नए रूप में ढ़ालेगा। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में 'स्त्री विमर्श व लोक जीवन', 'लोकगीतों' की भीनी–भीनी खुशबू है। ''लय में घुले शब्द ..... मैंने गीतों को कथा का आधार बनाया।'' 2

राजेन्द्र यादव के शब्दों में, ''मैत्रेयी न वक्तव्य देती है न भाषण। वह पात्रों को उठाकर उनके जीवन और परिवेश को पूरी नाटकीयता में देखती है। ..... मुहावरे दार जीवंत और खुरदरी लगने वाली भाषा की गवई ऊर्जा मैत्रेयी पुष्पा का ऐसा हथियार है जो उन्हें समकालीन कथाकारों में सबसे विशिष्ठ और अलग बनाती है।''

समूचा लोक जीवन मानवीय क्रिया–कलापों के सूत्र को लेकर चलता है। ''लोक जीवन अंचल विशेष के समग्र व समेकित संश्लिष्ट जीवन को रूपायित करता है। आँचलिकता व लोकतत्व का घनिष्ठ संबंध है।'' 3 साहित्य और लोक जीवन का घनिष्ठ संबंध है। भारत की पचहत्तर प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। इन्हीं गाँवों में भारत की सभ्यता, संस्कृति व लोक जीवन, आँचलिकता की झलक मिलती है। महात्मा गाँधी के अनुसार, ''भारतवर्ष की आत्मा गाँवों में निवास करती है।'' मैनेजर पाण्डेय के शब्दों में, ''चाक की कथा एक स्तर पर गद्य में चलती है और इसके साथ दूसरे स्तर पर लोकगीतों में।'' 4

परिचय :

बीसवीं सदी के उत्तार्द्ध की सशक्त महिला कथाकार है मैत्रेयी पुष्पा। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में लोक जीवन साकार हो उठा है। बुन्देल खण्ड एवं बृज भूमि की लोक–सभ्यता व लोक–संस्कृति एवं सामाजिक व सांस्कृतिक सरोकार, लोक जीवन, लोक विश्वास, लोक मान्यताएँ, लोक परम्पराएँ, लोकाचार, रीति–रिवाज, लोक संस्कार, व्रत–त्योहार, मेले, उत्सव, लोकगीत, लोक नृत्य आदि उनके 'चाक' उपन्यास में साकार हो उठे हैं। 'चाक' उपन्यास में विविध लोकगीतों की भीनी–भीनी खुशबू है।'चाक' उपन्यास के केन्द्र में है 'अतरपुर गाँव'। अतरपुर गाँव जाट किसानों का गाँव है और जैसा है वैसा ही बने रहना चाहता है। वह हर बदलाव का विरोधी है। मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में लोकगीतों की भरमार है। इन लोकगीतों में ग्रामीण अंचल की मिट्टी की खुशबू है। नारी–पात्र इन लोकगीतों को आत्मीयता एवं भावात्मकता से जाती है। इन लोकगीतों में ग्रामीण अंचल की स्थानीय रंगत है, लोक–संगीत है, गवई भाषा की ऊर्जा है। मैत्रेयी पुष्पा ने लोक–जीवन के विविध भावों, रंगों, मान्यताओं, परम्पराओं और विश्वासों को अभिव्यक्त करने के लिये लोकगीतों का बखूबी सहारा लिया है।

'चाक' उपन्यास में विविध लोकगीत :

लोकगीत लोक के गीत है जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा समाज अपनाता है। लोकगीत प्रत्येक देश और प्रत्येक जाति में अति प्राचीनकाल से गाये जाते रहे हैं और आज भी गाये जाते हैं। सामान्यतः लोकगीतों का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोक को समर्पित कर देता है। ''शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्यतः लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिये मानव अपने आनन्द की तरंग में छन्दोवद वाणी सहज उद्भूत करता है वही लोकगीत है।'' 5 लोकगीत या लोकसंगीत लोक का उच्छ्वास है। लोक जीवन का सबसे अहम हिस्सा है जो रस से सरोबार है। लोक जीवन में हृदयगत भावों का अतिरेक बढ़ जाता है, तब वे भाव गीत के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। लोकगीतों में रागात्मकता, संगीतात्मकता, रसानुभूति, नैसर्गिक भावद्रेक तथा गेय तत्व की प्रधानता होती है। मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में विविध लोकगीत है। जैसे–लोकगाथा/गाथागीत, उत्सवपर्व गीत, मांगलिक गीत, जातीय गीत, सगाई–विवाह गीत, नृत्य गीत, संस्कार गीत, फसल गीत, भक्ति गीत, फाग गीत, फागुन के लोकगीत, जलवा पूजन के गीत, ढोला गीत (राजा पिरथम की कथा), पहेली गीत व अन्य लोकगीत।

भक्तिगीत (कान्हा वाला गीत) लोकगीत – लोकगीत लोक जीवन का प्राण तत्व है। 'चाक' उपन्यास में लोकगीतों की भरमार है। चम्पाराम और झज्जू गीतों के खजानें हैं।

''कान्हा बरसाने में आ जइयो बुला रही राधा प्यारी
बुला रही राधा प्यारी रे, बुला रही राधा प्यारी/कान्हा .....
सोने को लोटा गंगाजल पानी,
अब तेरी गरज पड़े तौ पी जइयौ। बुला रही राधा प्यारी।'' 6

ढोला गीत (राजा पिरथम की कथा) –

''अरी लाज मेरी राख्यो, तू सारदे माय
कथा राजा पिरथम की सुनाऊ मोरी माय
अरे औखा रानी मंझा की मैं बरनूँ मोरी माया .....'' 7

जलवा पूजन के गीत –

राजा हो मेरे राजा, अरे तुम महाराजा न हो,
राजा हमें है तिलरिया की सार
तिलरी गढलावों, चुनरि रंगवाओं न हो .....'' 8

फागुन के गीत – विसुनदेवा सच्चे गायक की भाँति धीर मुद्रा में गाता है –

हूँ ऽऽऽऽऽ ..... सो श्यामा श्या मसो होरी खेलत नई
नंदनंदंन को राधा कीनों, माधव आय भईं/सो राधे रानी .....
सखा सखी भए, सखी सखा भईं, जसुमति भवन गईं
सो राधे रानी .....'' 9

फसल गीत – 'चाक' उपन्यास में फसल गीत की भी छटा है। फसल बौने से पूर्व ग्रामीण अंचल में फसल गीत गाये जाते हैं। किसान–किसानिन का गीत चल रहा है –

''मैं तो रारौ, मैं तो रारौ, बुवाऊँगी ऐसे ऐसे
मोय दाऊ की सों ऐसे।
मैं तो झिनमा, मैं तो झिनमा बुवाऊँगी ऐसे ऐसे
मोय दाऊ की सों ऐसे।
मैं तो निबुआ, मैं तो निबुआ तुड़ाऊँगी ऐसे ऐसे
मोय दाऊ की सों ऐसे।'' 10

सावन गीत – 'चाक' उपन्यास में अतरपुर गाँव की औरतें मगन होकर सावन के गीत गाती है –

''चंदा की चाँदनी मौरिला रैन उजियार,
राजा की रानी पानी नीकरीं जी,
हट–हट जा रहे मौरिला भरलिन दै नीर,
मो घर सास दुसावती जी, ...
झटपट–झटपट सासुल गगरी उतार,
बगन कौ मौरिला मेरे मन बसौ जी।'' 11

होली के गीत –

''अरू बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, नाचत थई थई
गोरे श्याम, साँवरी राधा, या सूरत चितई
सो राधे रानी ..... या सूरत, या सूरत, सूरत चितई .....। 12

आल्हा गीत – बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आल्हा और उदल की कथा बहुत ही लोकप्रिय है। 'चाक' उपन्यास में आल्हा गीत बहुत ही सुन्दर है –

''धुँआ उड़ानों आसमान में, सबिता रहे धुँध में छाय।
लनत तुम्हारी रजपूती पर, तेगा बाँधिवे को बेकार।
जो गति कीन्हीं तुम मोहबे में, सो गति करों तुम्हारी आज।
चहुँ दिस गोला छूटन लागे, कह कह करें अगिनिया बान।'' 13

अन्य लोकगीत – 'चाक' उपन्यास में अन्य लोकगीत भी महत्वपूर्ण है –

''चिड़ी तोय चामड़िया भावे
तेरे घर में सुन्दर नार
बलम तोय परनारी भावे।'' 14

अध्ययन के निष्कर्ष –

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में लोकगीतों की भरमार है। लोकगीतों में सुर–लय है। लोक जीवन, लोक चेतना भरी पड़ी है। अतरपुर गाँव में लोक जीवन है, लोक पर्व है, लोकगीत है, लोक उत्सव है, लोक रीति–रिवाज, परम्पराएँ, तीज–त्योहार, लोक आहें–कराहें है, धूप है और अंचल में धूल है। लोकगीत लोक जीवन की जीवन धड़कनों को अभिव्यक्त करते हैं। लोक जीवन की जैसी सरल, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकगीतों व लोक कथाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। लोक जीवन में लोक मानव का ह्रदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती है, गुनगुनाती है। लोकगीतों में निर्हित सौन्दर्य का मूल्यांकन सर्वथा अनुभूतिजन्य है। लोकगीत लोक जीवन का प्राणतत्व है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में लोकगीतों की भरमार है। लोकगीतों की विविधता है।

ज्ञानरंजन के शब्दों में – ''जिस लोक जीवन से हमारी रचनात्मक धारा काफी पहले विमुख हो चुकी थी। उसकी अनेक परतें मैत्रेयी पुष्पा ने खोल दी है।'' 'चाक' उपन्यास में रूढ़ियों व परम्पराओं की भरी पूरी दुनिया, भाषा और मुहावरें में भी मिट्टी की गंध।''

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. मैत्रेयी पुष्पा : गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 231
2. मैत्रेयी पुष्पा : गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 231
3. डॉ. आनन्द मोहन उपाध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, पृ.सं. 60
4. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, आवरण पृष्ठ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
5. सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक, पृ.सं. 250
6. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 356
7. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 83
8. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 373
9. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 358
10. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 108
11. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 93
12. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 358
13. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 176
14. मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 105